Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B.A Part – II (Hons)
Paper – III
नीतिशास्त्र (Ethics)

GRB BOOKS Notes!

1 "नैतिक मान्यता के स्वरूप" (What are the different the postulates of morality?)

प्रत्येक शास्त्र की मान्यताएँ होती हैं जिनको माने बिना वह शास्त्र संभव नहीं होता। आचारशास्त्र की भी ऐसी कुछ मान्यताएँ हैं जिनको माने बिना आचारशास्त्र संभव नहीं हो सकता। ये मान्यताएँ ही नैतिकता की आधार शिला हैं। हम मान्यताओं को स्वीकार किए बिना नैतिकता की कल्पना नहीं की जा सकती है। अतः इन मान्यताओं को नैतिकता की आवश्यक मान्यताएँ कहा जाता है। ये मान्यताएँ अनेक हैं—

1. व्यक्तित्व (Personality)
2. विवेक (Reason) और
3. संकल्प-स्वतन्त्रता (Freedom of will)

1. व्यक्तित्व — नैतिकता का प्रश्न नहीं उठता है जहाँ व्यक्तित्व नहीं है। हम जानते हैं कि नैतिक निर्णय कर्म पर नहीं बल्कि कर्ता पर किया जाता है क्योंकि कर्ता के बिना कर्म का लक्ष्य एवं अभिप्राय स्पष्ट नहीं है। नैतिक निर्णय का विषय अभिप्राय है। अतः एक विवेकशील प्राणी के बिना नैतिक निर्णय संभव नहीं है। नैतिक निर्णय का विषय भी विवेकशील प्राणी है तथा विषयी भी वही है क्योंकि वही नैतिक निर्णय

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB
BOOKS

Notes

जनेवाला है। अचेतन वस्तुओं की क्रियाओं पर नैतिक निर्णय नहीं किया जाता क्योंकि उनमें इच्छा, इच्छा संघर्ष, चुनाव, निर्णय, प्रयोजन, अभिप्राय आदि का अभाव पाया जाता है। उनमें नैतिक नियम को समझने एवं उनके अनुसार कर्म करने की क्षमता नहीं है। जहाँ व्यक्तित्व नहीं वहाँ नैतिकता का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

अब प्रश्न है कि व्यक्तित्व का क्या अर्थ है? वास्तव में व्यक्तित्व का विचार आत्मचेतना और आत्म नियंत्रण का संकेत करता है। किसी भी व्यक्ति को इन्हीं गुणों के कारण व्यक्तित्व प्रदान किया जाता है। उस प्राणी को व्यक्ति कहा जाता है जिसकी क्रिया अपनी हो अर्थात् आत्म-नियंत्रित हो और वह उसके लिए उत्तरदायी हो। दूसरे प्राणी अपनी प्रवृत्तियों के द्वारा कार्य सम्पादित करते हैं। आत्म नियंत्रण बुद्धि और आत्मनियंत्रण क्रिया जिसकी है, वही व्यक्ति है।

संवेदनवादी (Sensationists) तथा अनुभववादी (Empiricists) का मत है कि व्यक्ति केवल चेतन प्रक्रियाओं और स्थितियों का समाहार मात्र है। प्रतिक्षण मनुष्य की चेतन क्रियाएँ हो रही हैं और फलस्वरूप अनुभव हो रहे हैं। इन्हीं को

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

समाधि को व्यक्ति कहा जाता है। लेकिन प्रतीचाओं के आधार स्वरूप कोई स्थायी तत्व नहीं है तो क्रिया होती है कहां और किसमें? अनुभव मनुष्य को होता है पर यदि अनेक परिवर्तन के आधार स्वरूप कोई स्थायी तत्व न होता अनुभवकर्ता कौन है? यदि अनुभवकर्ता भी अनुभव की भांति परिवर्तनशील है तो व्यक्ति में एकता अर्थात् एक नहीं मानते हैं? क्यों सभी शारीरिक या मानसिक अवस्थाओं के परिवर्तनों के बाद भी किसी व्यक्ति को हम 'दूसरा' नहीं कहते।

जैसे-जैसे मनुष्य का विकास जन्म के बाद से होता है वह अपने कर्मों को अपना समझता है और उनके उत्तरदायित्व की चेतना उसमें विकसित हो ही जाती है। इस अवस्था से ही वह नैतिकता के क्षेत्र में पदार्पण करता है। यही उसके व्यक्तित्व का लक्षण है। अबतक मनुष्य अपने कर्मों के लिए उत्तरदायी नहीं है अर्थात् उसके कर्म उसके नहीं हैं तब तक नैतिकता का प्रश्न नहीं होता है। इसलिए व्यक्तित्व नैतिक निर्णय की एक आवश्यक मान्यता है।

2 विवेक—

मनुष्य के दो आवश्यक गुण हैं — पाशविक

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

प्रवृत्ति या कामुकता और विवेक शक्ति। मानव प्रकृति के ये दो आवश्यक अंग हैं। पर दोनों में विवेक शक्ति ही उसकी विशेषता है। इसी के कारण वह अन्य प्राणियों से भिन्न है। कामुकता या पाशविक प्रवृत्ति तो पशुओं में भी होती है। मनुष्य विवेक शक्ति द्वारा ही अपनी इच्छाओं को अभिव्यक्त करता है और ज्ञानोपार्जन करता है। इसी शक्ति से वह अपनी प्रवृत्तियों को तौलता है, विचार करता है और शुभाशुभ को ध्यान में रखकर संकल्प करता है। इसी के कारण उसका ऐच्छिक कर्म होता है। यदि विवेक नहीं हो तो फिर नैतिकता कहाँ? पागल, अविवेकी और बच्चों की क्रियाएँ नैतिक क्यों नहीं है। उनके कर्म ऐच्छिक नहीं होते। उनमें शुभाशुभ का भेद नहीं होता। नैतिक निर्णय के लिए भी तो कर्त्ता को नैतिक सिद्धान्तों का ज्ञान आवश्यक है। नैतिक सिद्धान्तों का ज्ञान तो तभी हो सकता है जब विवेक शक्ति हो। अतः नैतिक निर्णय का विषय, ऐच्छिक कर्म, विवेक शक्ति रहने पर ही संभव है और साथ-साथ नैतिक निर्णय के कर्त्ता को भी विवेक युक्त होना आवश्यक है। अतः विवेक शक्ति नैतिकता की एक आवश्यक मान्यता है।

3. आत्मनिर्धारण या संकल्प-स्वातंत्र्य
संकल्प स्वातंत्र्य नैतिकता

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes!

की तीसरी आवश्यकता है। हम जानते है कि स्वतंत्र मार्ग के अंत निर्णय पक्ष में इच्छा - संघर्ष, चुनाव, निर्णय आदि मानसिक प्रक्रियाएँ आती हैं। किसी इच्छा संघर्ष के बाद हम स्वतंत्र भी इच्छा को चुनने में हम बाहरी बंधनों से। हम चुनाव नियंत्रित नहीं परिस्थितियों द्वारा हम रास्ते में आ रहे हैं। जैसे किसी आने वाली राही का हम अपने का ले लेते हैं। जेब में रुपया हम जिसको इस प्रकार की इच्छाएँ हमारे मन में हो तो यह कि होती है एक तो यह कि हम राही को रोककर रुपया छीन लें, दूसरा यह कि अंत में हम निर्णय करते हैं कि हम राही को रोककर रुपया छीन लेते हैं। यहाँ इन दो विकल्पों में से किसी एक को चुनने में हम स्वतंत्र हैं। हम अपने निर्णय में किसी बाह्य शक्ति द्वारा नियंत्रित नहीं हैं। हम अपने ही द्वारा नियंत्रित हैं। अपने चरित्र द्वारा इस तरह हम पाते हैं कि मनुष्य विभिन्न विकल्पों में से किसी एक को चुनने में स्वतंत्र है। यदि वह स्वतंत्र नहीं रहता तो कर्मों की जिम्मेदारी उसपर नहीं होती। पर कर्मों का औचित्य कर्ता पर रहता है। हम कर्मों की प्रशंसा या निंदा करते हैं। कर्मों

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

के लिए पुरस्कार या दंड है। कर्मों को अच्छा या बुरा, उचित-अनुचित शुभ-अशुभ कहते हैं। ये सारी बातें तभी अर्थपूर्ण होंगी जब मानव में संकल्प-स्वातंत्र्य को माना जाए। संकल्प-स्वातंत्र्य के अभाव में नैतिकता का अर्थ ही नहीं रह जाता। अतः कांट ने ठीक ही कहा है कि संकल्प-स्वातंत्र्य नैतिकता का आधार है।

यदि मनुष्य बाह्य परिस्थितियों और प्राकृतिक प्रवृत्तियों के विरुद्ध कर्म नहीं कर सकता तो वह किसी निर्जीव पदार्थ से अलग नहीं है। तब तो वह एक जड़ यंत्र की भाँति ही है। वह स्वयं अपनी क्रिया को नियंत्रित नहीं कर सकता, अपितु अपनी प्राकृतिक प्रवृत्तियों और बाह्य परिस्थितियों के अनुसार ही आचरण कर सकता है। अतः उसकी क्रियाएँ उत्तरदायित्व से परे हैं। मनुष्य उत्तरदायी तो तभी होता है जब वह उसका उत्तर दे सके। पर जब हमारी क्रियाएँ हमारी स्वतंत्र इच्छा से नहीं हो सकतीं तब उनका उत्तर हम कैसे दे सकते हैं। अतः हमारी क्रिया एक प्राकृतिक घटना की भाँति हो जाती है। इसलिए जिस प्रकार किसी प्राकृतिक घटना की सुन्दरता और कुरूपता का निर्णय किया जाता है उसी प्रकार मानव कर्मों

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB
BOOKS

Notes!

को सुन्दर कुरूप कहा जा सकता है, उचित-अनुचित, वर्ग-अधर्म नहीं। वेदान्त या प्राकृतिक विचारक हेगल का मत है कि यंत्रवत विश्व में नैतिकता का महत्व नहीं रहता अर्थात यदि इस विश्व की कल्पना की जाय जहाँ प्रत्येक घटना नियत है, हर रहनी, जीवन-मृत्यु, चाबी कभी निश्चित रूप से चलती है बाद कर्म, उचित का महत्व नहीं है। तब उचित, स्वतंत्रता ही नहीं रह जाता है। क्या है तब चाहिए, यदि मनुष्य कर्मों में स्वतंत्र नहीं है अर्थात बाह्य परिस्थिति या और प्राकृतिक प्रवृत्तियों के विरुद्ध कर्म नहीं कर सकता तो किसी आचरण के सुधार या अर्थ विधिपूर्वक नियंत्रण को कैसे ठीक है? यदि किसी ने दो तीन मनुष्यों की हत्या कर दी है तो कहा जाता है कि उसके आचरण को सुधारना चाहिए। पर यह तभी संभव है जब यह माना जाय कि यदि वह चाहता तो वैसा कर्म नहीं भी कर सकता था अर्थात जो उसने किया, उसमें वह स्वतंत्र था। ऐसा यदि न माना जाय तो फिर आचरण सुधार आदि का विचार ही गलत है।

संकल्प स्वातंत्र्य का वास्तविक अर्थ आत्म-निर्धारण

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes!

इसका अर्थ अनियतिवाद नहीं है। मनुष्य को कार्य करने की स्वतंत्रता है। इसका अर्थ है कि हमारे कार्य हमारे ही द्वारा निर्धारित होते हैं; बाह्य परिस्थितियों द्वारा नहीं। अतः हम इन कार्यों के लिए उत्तरदायी हैं। विभिन्न विकल्पों में से किसी एक को चुनने में मनुष्य स्वतंत्र है। आत्म वह न मानसिक प्रवृत्तियों द्वारा यंत्रवत नियंत्रित रहता है और न भौतिक एवं सामाजिक परिस्थितियों द्वारा ही। मनुष्य के कार्य उसकी आत्मा एवं उसके शुभ के प्रत्यय द्वारा निर्धारित होते हैं। इसप्रकार संकल्प-स्वातंत्र्य नैतिकता की एक आवश्यक मान्यता है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS